The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 10 | October 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF(2026): 5.6
Website: www.theacademic.in

अस्पृश्यता उन्मूलन में समाचार पत्रों की भूमिका पर आधारित एक अध्ययन

डॉ संजीव कुमार

सहायक प्राध्यापक, श्री शंकराचार्य प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, ssanjeevmzp@gmail.com

आलिया मिर्ज़ा बेग

शोधार्थी, श्री शंकराचार्य प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी ,भिलाई

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.24463304

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Received: 31-10-2026

Accepted: 05-11-2026

Published: 20-11-2026

Keywords:

छुआछुत ,पत्रकारिता .समाज ,परिवर्तन ,भारत ,छत्तीसगढ़.

ABSTRACT

पत्रकारिता के माध्यम से समाचार पत्र समाज के विभिन्न वर्गों तक जानकारी पहुंचाते हैं, जिससे लोग राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, पर्यावरणीय और सांस्कृतिक मुद्दों पर विचार कर सकते हैं लोगों को समाज में चल रहे मुद्दों के बारे में जानकारी प्रदान करवाना और समाजिक चर्चाओं को प्रेरित करना जो उनके विचारों और निर्णयों को प्रभावित कर सकती हैं। इसके अलावा, समाचार पत्रों की प्रतिष्ठा और विश्वसनीयता उन्हें एक मान्य स्त्रोत बनाती है जिससे समाज की न्यूनतम जानकारी वाला वर्ग भी विश्वास करते है।

खींचो न तीर न कमान निकालों

जब तोप मुकाबिल हो तो अख़बार निकालों

--अकबर इलाहाबादी

आज़ादी पूर्व अकबर इलाहाबादी के ये कथन आज भी सार्थक है .पत्रकारिता का जन्म ही समाज सुधार एंव विकास के लिए हुआ है .समाज के उन अनछुए पहलुओं को उजागर करना जिस पर या तो समाज चुप है या फिर उसे नियति मानकर ख़ामोशी से जीने लगता है परंतु इस देश में ऐसे –ऐसे महापुरुष और समाजसेवी हुए हैं जिन्होंने सामाजिक परिवर्तन तथा छुआछूत निवारण के लिए अपना पूरा जीवन तक त्याग दिया. समाज से लंबी लड़ाई लड़ी और इस लड़ाई में समाचार पत्र उनके बहुत प्रमुख अस्त्र बने.

Disclaimer: The opinions, interpretations, conclusions, recommendations, analyses, and statements expressed in this research article are solely those of the author(s) and do not reflect the views, policies, or positions of the Publisher, Chief Editor, Editors, Editorial Board, Reviewers, or their affiliated institutions. The author(s) are solely responsible for ensuring the originality, authenticity, and integrity of the manuscript and for ensuring that it is free from plagiarism, AI-generated content, copyright infringement, data falsification, and any other form of academic misconduct.

प्रस्तावना-

देश आज तीव्रता से विकास कर रहा है .हम चाँद और मंगल तक पहुँच चुके है परन्तु समाज की एक ऐसी समस्या जो हजारों वर्षों से इसे दीमक की तरह खोखला किए जा रही है पर यह समस्या आज भी वैसे के वैसा ही बना हुआ है , वह है अस्पृश्यता . भारत भर में आज भी 27 प्रतिशत लोगों ने माना कि वे किसी ना किसी रूप में छुआछूत को मानते हैं और ये सबसे ज्यादा ब्राह्मणों में (52 प्रतिशत) फैली हुई है । अगड़ी जातियों में भी 24 प्रतिशत लोग छुआछूत करते हैं। ओबीसी में 33 प्रतिशत, एससी में 15 प्रतिशत और एसटी में 22 प्रतिशत लोग छुआछूत को मानते हैं।अगर धर्म की बात की जाए तो 30 प्रतिशत हिंदू, 23 प्रतिशत सिख, 18 प्रतिशत मुस्लिम और पांच प्रतिशत ईसाई छुआछूत को मानते हैं। इस लिस्ट में सबसे ऊपर हैं जैन (35 %) जो ये खुल कर मानते हैं कि वो छुआछूत में यकीन रखते हैं।सर्वे के मुताबिक मध्यप्रदेश के 53 प्रतिशत लोग छुआछूत में भरोसा रखते हैं। हिमाचल प्रदेश में 50 प्रतिशत, छत्तीसगढ़ में 48 प्रतिशत, राजस्थान और बिहार में 47 प्रतिशत, यूपी में 43 प्रतिशत और उत्तराखंड में 40 प्रतिशत लोग छुआछूत में यकीन रखते हैं।

पश्चिम बंगाल भारत का सबसे प्रोग्रेसिव राज्य है जहां मात्र एक प्रतिशत लोग ही छुआछूत को मानते हैं। केरल में दो प्रतिशत, महाराष्ट्र में चार प्रतिशत, नॉर्थ ईस्ट में सात प्रतिशत और आंध्र प्रदेश में 10 प्रतिशत लोग छुआछूत में यकीन करते हैं।

1. पत्रकारिता को जनता का संसद कहा जाता है परन्तु बड़े दुःख के साथ कहना पड़ रहा है कि जिस देश में 10,152से ज्यादा समाचार पत्र प्रकाशित होते है, उस संसद में देश के सबसे ज्यादा उपेक्षित समाज की सदस्यता नगणय है |1910-30के मध्य देश में 50 से ज्यादा दलित पत्र, समाचार पत्र प्रकाशित होते थे | इन महत्वपूर्ण पत्रों ने अशिक्षा और शोषित दलितों के उस दौर में भी अपने प्रतिकार को पुरे साहस के साथ समाज तक पहुँचाया और छुआछुत, पाखंड, कर्मकांड के प्रति जागृत किया| इस सामाजिक बुराई से देश आरंभ से ही जूझता रहा है. लेकिन ऐसा नही है समाचार पत्रों ने इस सामाजिक दुर्भावना के उन्मूलन के लिए कार्य नही किया . जब से पत्र– पत्रिका का भारत में आगाज़ हुआ है अनेक समाज सुधारकों एवं राष्ट्र उन्नति का हित चाहने वाले लोगों ने इस कुप्रथा को कुचलने के लिए समाचार पत्रों को अपना सख्त माध्यम बनाया है. इन महापुरुषों, विचारकों में जोतिबा फुले , शिवराम काम्बले, डॉ.आंबेडकर एवं राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जैसे अग्रणी नाम शामिल है.

<u>जोतिबा फुले</u>

ज्योतिबा फुले का जन्म 11 अप्रैल 1827 को पुणे में हुआ था। उन्होंने स्त्री शिक्षा, शुद्र आदिशुद्र में व्याप्त पाखंड और स्त्रियों के उत्थान महान समाज सुधारक के लिए काफी कार्य किये। उनका असली नाम ज्योतिराव गोविंदराव फुले था। वह19 वीं सदी के एक बड़े समाज सुधारक, शिक्षक तथा महान विचारक थे। ज्योतिबा फुले भारतीय समाज में

प्रचलित जाति आधारित विभाजन और भेदभाव, पाखंड के खिलाफ थे ।उन्होंने विधवाओं और महिलाओं के कल्याण के लिए काफी काम किया। उन्होंने इसके साथ ही किसानों, वंचितों की हालत सुधारने और उनके कल्याण के लिए भी काफी प्रयास किये। स्त्रियों की दशा सुधारने और उनकी शिक्षा के लिए ज्योतिबा ने 1854 में एक स्कूल खोला। यह इस काम के लिए देश में पहला स्त्री विद्यालय था।24 सितंबर1873 को दलितों और निर्बल , शूद्र वर्ग को न्याय दिलाने के लिए ज्योतिबा ने' सत्यशोधक समाज 'स्थापित किया। उनकी समाजसेवा देखकर1888 ई .में मुंबई की एक विशाल जन सभा के समक्ष में उन्हें' महात्मा 'की उपाधि दी गयी। सर्वप्रथम उन्होंने ही दलितों के हित के लिए जनमाध्यम को अपना हथियार बनाया ।

दलित पत्रकारिता के **जनक** जोतिबा गोविंदराव फुले ने 1877 में दीनबंधु साप्ताहिक पत्र में शासक वर्ग के खिलाफ लिखना आरंभ किया ।जनवरी 1873 में मराठी भाषा में निकलने वाला यह मासिक पत्र पुणे से छपता था ।1888तक छपने वाले इस पत्र में फुले के प्रमुख सहयोगी नारायण मेघा जी लोखंडे जी इसका संपादन कर रहे थे ।इस पत्र में फुले जी का आर्थिक सहयोग के.पी .भालेकर रहे थे ।जो एक मजदूर नेता थे ।फुले जी ने कई महत्वपूर्ण पत्र एंव पत्रिका तथा पुस्तकों की रचना की जिसने अस्पृश्यता उन्मूलन,अशिक्षा, पाखंड एंव हिन्दू धर्म की कुरीतियों पर गहरी चोट की । 1873में जोतिबा जी द्वारा रचित पुस्तक **गुलामगिरी** में उन्होंने हिन्दू धर्म की सभी पुराणों के देवी-देवताओं, अवतारों तथा सुर असुर के युद्ध को खंडित करते हुए लिखा है की– ब्राह्मणों द्वारा रचित सभी पुराण भारत के मूलनिवासियों को गुलाम बनाने की लिए रची गई काल्पनिक पुस्तके है।सन 1885 में जोतिबा फुले जी ने **सतसार** नामक एक लघुपत्र प्रकाशित किया ।एक आना में बिकने वाली इस पत्रिका का प्रथम अंक की1050 प्रतिया बिक जाने से फुले की पत्रिका का महत्व हम समझ सकते है । वह भी ऐसे दौर में जब की अछूत– पिछड़ा समाज शिक्षा में शून्य पर था ।इस पत्रिका में ब्रह्म समाज तथा प्रार्थना समाज में छुपे अश्प्रिश्यता का खंडन किया गया था । 1885 में ही फुले जी ने एक और महत्वपूर्ण पत्रिका छापी थी जिसका नाम था **इशारा** ।इस पत्रिका के माध्यम से उन्होंने अछूत समाज की राजशाही शासन तथा अंग्रेजी हुकूमत में दलितों की स्थिति का वर्णन किया था । इसके अतिरिक्त उन्होंने कई अन्य पुस्तकों की भी रचना की थी जैसे किसान का कोड़ा , ब्राह्मण की चालबाजी , आदि ।

उनकी सभी रचनाए उस दौर में समाज में फैले पुरोहितों द्वारा कर्मकांड एंव कपोलकल्पित ईश्वर का के विरोध में लिखी गई थी जिसने शूद्रों , दलितों को शिक्षा के लिए प्रेरित किया था और उन्हें इस पाखंड से बचने में मदद की जिसके फलस्वरूप उनमे शिक्षा की अलख जग पायी और वे अपने सम्मान के लिए जीना सीखने लगे .

2. शिवराम काम्बले

शिवराम जानबा काम्बले दलित समाज में पैदा होने वाले एक ऐसे चिन्तक,समाज सुधारक , लेखक और सम्पादक हुए हैं जिन्हें दलित समाज कभी भूल नहीं पायेगा । काम्बले जी दलित समाज के पहले संपादक थे । इनका जन्म सन 1875 में हुआ था , वे महार दलित कौम में पैदा हुए थे उनके पिताजी का नाम जानबाजी काम्बले था। जानबा काम्बले

मूल रूप से भांबुरडे नामक गाँव के वतनदार)हकदार (थे, किन्तु गावं को) अछूतपन के काम (छोड़ कर पूना में अंग्रेजों के यहाँ बटलर का काम करते थे । पिताजी के अंग्रेजों के यहाँ काम करने से शिवराम भी अंग्रेजों की तहजीब और सभ्यता के सम्पर्क में आये।

अंग्रेजों के रहन-सहन का प्रभाव बालक शिवराम पर पडा ,यह अंग्रेजी तहजीब ,रहन– सहन का ही प्रभाव था कि जिस दलित समाज में शिवराम पैदा हुए थे उस समाज में व्याप्त अंध-विश्वास, कुरुतियों और अनेक कुप्रथाओं को ख़त्म करने का बीड़ा शिवराम जानबाजी काम्बले ने उठाया ।सन1904 में उन्होंने सोमवंशीय हित-चिन्तक मित्र समाज नामक एक संस्था की स्थापना की ,वे एक ओर जहाँ दलित समाज को संगठित कर रहे थे । समाज में व्याप्त बुराईयों के बारे में लोगों को जगा रहे थे वहीँ दूसरी ओर वे इस बात की बराबर कोशिश करते रहते थे कि हिन्दू अपना दृष्टिकोण बदले और दलितों की हुई अधोगति में उनकी अपनी जिम्मेदारी के बारे में सोचे उनको आगे बढ़ने में मदद करे ।

वे दलित समाज के व्याप्त बुराईयों जैसे पशुओं की बलि देना, मृत पशु के मांस का सेवन करना, मन्दिरों में लड़कियों को देवदासी बनाना इत्यादि के विरुध्द सतत प्रचार कर रहे थे ।अपने उद्देश्य के लिए शिवराम काम्बले ने सन 1908 से 1910 तक **सोमवंशीय मित्र** नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन किया था, इस पत्रिका में वे दलितों के सम्बन्ध में सतत लेख लिखा करते थे । सोमवंशीय मित्र मराठी में छपता था ,इस समाचार पत्र के के 24 अंक ही निकाल पाये परन्तु इन अंको ने समाज पर बहुत गहरी छाप छोड़ी थी ।

देवदासी प्रथा के विरुध्द शिवरामजी काम्बले जी के इस पत्र ने उल्लेखनीय कार्य किया । उन्होंने दलित जातियों में देवदासी बनने की प्रथा के विरुध्द एक बड़ा अभियान चलाया । उनके द्वारा प्रकाशित 'सोमवंशीय मित्र के एक अंक में शिबूबाई लक्ष्मण जाधव का पत्र छपा था । शिबूबाई देवदासी थी । पत्र में शिबूबाई ने देवदासी बनने के लिए अपने माँ-बाप को दोषी बताया था । शिबू बाई ने लिखा था की हिन्दू पंडों के झांसे में आकर गरीब दलित समाज के लोग भगवान् के नाम पर अपनी लडकियों को मन्दिर में दान दे देते हैं । बाद में यही लडकियाँ पण्डे और धन्ना सेठों की हवस की शिकार हो जाती है । वे उन्हें गलत रास्ते पर चलने के लिए बाध्य कर देते हैं । शिबू बाई जाधव का पत्र पढ़ कर गनपत राव हनमंत गायकवाड नामक दलित युवक ने शिबूबाई से विवाह कर लिया था । इस तरह के देवदासियों के विवाह शिवराम जी काम्बले ने अनेक दलित युवकों से कराये ।

दलितों की माली हालत सुधारने दलितों को पुलिस और सेना में भर्ती किया जाना चाहिए ,ऐसी शिवराम जानबाजी काम्बले की सोच थी । सन 1896 से ब्रिटिश आर्मी में महारों की भर्ती बंद थी। इस संबंध में सन 1904 में शिवराम काम्बले ने पूणे के पास सासवड नामक स्थान में एक बड़ी मीटिंग बुलायी। इसमें 51गावों के दलित समाज के लोग जमा हुए थे। मीटिंग में एक प्रस्ताव पारित कर गवर्नर बाम्बे को सौपा गया। यही मांग-पत्र सन 1905 में भारत सरकार और 10 दिसम्बर सन 1910 को भारत के सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट को सौपा गया।

शिवराम जानबा जी काम्बले की मेहनत अंततः रंग लाई । 6 फरवरी 1917 को जब प्रथम विश्व युद्ध अपने चरम पर था , ब्रिटिश आर्मी में महारों की भर्ती खुली। शिवराम जानबाजी काम्बले ने दलित बस्तियों में कई वाचनालयों की स्थापना की ।

शिवराम काम्बले के सामाजिक कार्यों से बड़ोदा के **महाराजा सयाजीराव गायकवाड़** बेहद प्रभावित हुए थे । उन्होंने शिवराम जानबाजी काम्बले को बड़ौदा बुलाकर 11 सितम्बर 1908 को उनका अपने राज्य की ओर से सम्मान किया था ।

3. स्वामी अछुतानंद

भारतीय इतिहास के पन्नों में कई दलित नायको को समाज ने वह सम्मान नही दिया जिसके वे हक़दार थे । स्वामी अछुतानंद के साथ भी हमने यही किया है । स्वामी अछुतानंद एक प्रखर पत्रकार के साथ -साथ,दूरदर्शी राजनीतिज्ञ ,कवि, लेखक, एंव नाटककार थे पर उनकी रचनाओं से हम आज भी बहुत दूर है । **हिंदी भाषा में दलित पत्रकारिता के आरंभ का श्रेय इनको ही प्राप्त है** । उनका जन्म1879 में उत्तर प्रदेश के ग्राम उमरी, पोस्ट सिरसागंज, जिला मैनपुरी में हुआ था। उनके पिता श्री मोती राम ने उनका नाम हीरा लाल रखा था।

स्वामी जी आदिहिन्दू आन्दोलन के प्रवर्तक, प्रचारक और प्रखर राजनीतिक वक्ता ही नहीं, बल्कि वे हिंदी दलित साहित्य और पत्रकारिता के जनक भी है । 1917 में स्वामी जी ने **अछूत** मासिक अंक का प्रकाशन कर **हिंदी क्षेत्र** से दलित पत्रकारिता का आरंभ किया , 1922-23में दिल्ली से‘ **प्राचीन हिन्दू** ’तथा 1924 से32 तक कानपुर से ‘**आदिहिन्दू** ’पत्र निकाला था। आदिहिन्दू पत्र के नाम से ही उन्होंने कानपुर में 1925 में प्रिंटिंग प्रेस लगाया था । और उसी प्रेस से वे अपने पत्र और साहित्य का प्रकाशन करते थे। वे हिंदी के पहले दलित कवि थे, जिनकी कविता में आप कबीर और रैदास की निर्गुणवादी वैचारिकी का विकास देखेंगे । कविता में उनका उपनाम‘ हरिहर ’था। उनकी बहुत ही महत्वपूर्ण काव्य कृति‘ आदि खंड काव्य ’है जिसे13 मई1929 को एच .एल.जटिया म्युनिस्पल कमिश्नर तथा प्रधान आदिहिन्दू सभा कन्नौज के द्वारा प्रकाशित की गई थी। इसके प्रथम पृष्ठ पर लिखा है‘—श्री108 अछूत स्वामी जी की बहुत पुरानी खोई हुई अपूर्व कविता को बड़ी तलाश से पाने की ख़ुशी में आदिहिन्दू) शूद्रअछूत कहाने वाले (भाइयों को भेंट है।’

‘ **आदिखंड काव्य** ’की रचना1929 से कई साल पहले हुई थी जो छपने से पहले ही खो गयी थी। यह काव्य आल्हा विधा में लिखा गया है, जिसमें63 पद और आठ पंक्तियों का एक अध्याय है। काव्य की अंतिम पंक्तियाँ दलित-पिछड़ी दोनों जातियों को संगठित करने का सन्देश देती हैं।

4. महात्मा गाँधी

मोहनदास करमचंद गाँधी जिन्हें राष्ट्र महात्मा गाँधी के नाम से जानता है जिन्होंने गोलमेज सम्मलेन के पश्चात् हरिजन सेवा का प्रण लिया था , उन्होंने 1933 में साप्ताहिक हरिजन पत्र का अंग्रेजी में प्रकाशन आरंभ किया ।पुनापैक्ट के बाद गाँधी ने राजनीति से सन्यास ले लिया था । 30 सितम्बर 1932 को गाँधी ने' छुआछुत विरोधी संघ 'की स्थापना की और दलितों को हरिजन की संज्ञा दी , जिससे छुआछुत विरोधी का नाम बदलकर हरिजन संघ कर दिया गया । 11 फरवरी 1933 को गाँधी जी ने हरिजन साप्ताहिक गुजराती में शुरू किया फिर इसे हिंदी और अंग्रेजी में भी प्रकाशित किया गया ।इन साप्ताहिकों के माध्यम से गाँधी जी ने अस्पृश्यता निवारण के आन्दोलन को मजबूत किया ।

5. डॉ.आंबेडकर

डॉ भीम राव रामजी आंबेडकर को ज्यादातर लोग,राजनीतिज्ञ , अर्थशास्त्री , समाजसेवी , एंव दलित मसीहा के ही रूप में पहचानते है वे एक प्रखर पत्रकार और कुशल वक्ता थे यह बहुतों को नही पता है , जबकि उनकी सख्शियत को निखारने में उनकी पत्रकारिता का बहुत ही बड़ा योगदान रहा है ।

डॉ आंबेडकर ने अपने जीवन के 65 वर्षो में 36 वर्ष तक एक पत्रकार के रूप में कार्य किया है । 1920 से 1956 वे लगातार पत्रकारिता से जुड़े रहे , जो उनकी राजनीतिक ताक़त बनी । 31 जनवरी 1920 में उन्होंने अपना पहला क्रन्तिकारी पाक्षिक मूकनायक का संपादन किया था । इस अख़बार के पहले ही अंक में उन्होंने अपने पत्रकारिता के उद्देश्य को रेखांकित किया था 'बहिष्कृत लोगों पर हो रहे और भविष्य में होने वाले अन्याय के उपाय सोचकर उनकी भावी उन्नति एंव उनके मार्ग के सच्चे स्वरुप की चर्चा करने के लिए वर्तमान पत्रों में जगह नही है , इसलिए मूकनायक को प्रकाशित करना पड़ा' । 3 अप्रैल 1927 को बहिष्कृत भारत , 29 जून 1928 को समता ,24 नवम्बर 1930 को जनता जिसे आज़ादी बाद उन्होंने हिंदी में भी प्रकाशित किया तथा 4 फरवरी 1956 से प्रबुद्ध का प्रकाशन भी किया ।

डॉ आंबेडकर की पत्रकारिता और उनके सारे समाचारपत्रों का यदि विश्लेषण किया जाए तो हम पायेंगे कि वे ए क पत्रकार के रूप में भी बहिष्कृत समाज की मुक्ति के साथ नए राष्ट्र के निर्माण के लिए कार्य करते रहें क्योंकि उनको इस तथ्य का गहरा अहसास था कि बहिष्कृत भारत (दलित समाज की पूर्ण मुक्ति और प्रबुद्ध भारत का निर्माण एक दूसरे के पर्याय हैं।दलित समाज पूर्ण रूप से उस दौर में अशिक्षित था अतः उनका कम आसान नही था क्योकि जिसके हित केलिए वह लिख रहे थे वही उन्हें नही समझ पा रहे थे परन्तु उनकी आवाज़ को दुनिया के मशहूर अख़बार दुनिया में पहुंचा रहे थे और इसी प्रसिद्धि ने उन्हें अंतराष्ट्रीय ख्याति का नेता बनाया था ।

निष्कर्ष –

आज़ादी पूर्व भारत में अनेकों ऐसे समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं प्रकाशित होती थी जो सामाजिक शोषण, अस्पृश्यता ,भेदभाव जैसी तमाम सामाजिक बुराइयों से समाज को मुक्त करने हेतु लिखा करते थे. आज भी देश के हर कोने में हर

भाषा में हजारों ऐसे समाचार पत्र- पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही है जो इन समस्याओं को समाज के सामने उजागर करने का कार्य कर रही है. इन समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं का उद्देश्य इन कुरीतियों से समाज को बाहर निकलना है.पर दुर्भाग्य की तमाम कोशिशों के बावजूद हम विफल है और ये सामाजिक बुराई आज भी समाज में अपनी जड़े जमाए हुए है .

References

[1]

[1] https://www.amarujala.com/news-archives/india-news-archives/one-in-four-indians-admit-to-practising-untouchability-hindi-news-vk

[1] वही

[1] https://www.amarujala.com/india-news/press-in-india-2023-newspapers-and-magazines-increased-in-all-languages-hindi-english-urdu-2024-02-23

[1] .बेचैन , श्योराज सिंह –मूकनायक , पृष्ठ-5

[1] . https://www.prabhasakshi.com/personality/profile-of-jyotirao-govindrao-phule

[1] .https;/en.wikipedia.org/wiki/deenbandhu

[1] फुले ,जोतिबराव –गुलामगिरी ,प्रस्तावना

[1] गजभिये ,संजय –सतसार (अनुवादक)सम्यक प्रकाशान नई दिल्ली ,२०१६

[1] गजभिये ,संजय –इशारा (अनुवादक)सम्यक प्रकाशन,नई दिल्ली ,२०१८

[1] . http://amritlalukey.blogspot.com/2012/02/blog-post_13.html

[1] .राम ,जगजीवन :भारत में जातिवाद और हरिजन समस्या – पृष्ठ -40

[1] . हाशिए की आवाज़ मासिक पत्रिका (अप्रैल 2020 अंक) – पृष्ठ-21

[1] . https://www.forwardpress.in/2020/01/mooknayak-100-years-journalism-ambedkar-hindi/

[1] . https://www.forwardpress.in/2020/01/mooknayak-100-years-journalism-ambedkar-hindi/